भाग्य के प्रकार

चीन में भविष्य कथन की कला एवं विज्ञान में तीन तन्त्रों का उपयोग होता है । चीनी लोगों का विश्वास था कि स्वर्ग, पृथ्वी और मनुष्य ऊर्जा के प्रतिध्वनित तन्त्र हैं जिसमें एक तन्त्र की ऊर्जा दूसरे में परिवर्तित और पैदा होती है । ये तीन तंत्र शाबूत है और प्रत्येक मनुष्य के लिए निश्चित होते है। इन्हीं तीन तंत्रो को तीन प्रकार के भाग्य माना गया है । किसी मनुष्य की उन्नति में इन तीन भाग्यों का हाथ माना गया है । इनमें से एक को बदला नहीं जा सकता परन्तु दो में कुछ परिवर्तन किया जा सकता है ।

(1) दैवीय भाग्य

मनुष्य जिस आर्थिक-सामाजिक हैसियत के परिवार में जन्म लेता है वह उसके वश में नहीं होता । मनुष्य के जन्म के समय जो परिवार, समाज, समय, देश और परिस्थितियां उसे मिलती हैं उन्हें ईश्वर की देन माना जाता है । विधाता द्वारा प्रदान की गई इन्हीं उपलब्धियों को स्वर्ग का भाग्य कहा जाता है । किसी व्यक्ति का स्वर्ग का भाग्य उसके जन्म के साथ ही निर्धारित हो जाता है क्योंकि यह जन्म के समय कई तत्वों पर निर्भर करता है । मनुष्य प्राकृतिक चक्रों को बदल नहीं सकता इसलिए उसके स्वर्ग के भाग्य में किसी तरह का बदलाव संभव नहीं है । इन्हीं तत्वों के अध्ययन से मनुष्य का व्यक्तित्व, भाग्योदय और भविष्य इत्यादि निर्धारित होते हैं ।

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

मात्र तत्वों की स्थिति ही नहीं साथ ही अनेक परिस्थितियां मनुष्य के लिये पूर्व निर्धारित होती हैं। जैसे माता- पिता, जाति, समाज, रक्त संबंधी आदि को वह स्वयं चयनित नहीं करता। ये सभी उसे स्वत: ही मिलते हैं। उसने किस सम्प्रदाय में जन्म लिया है और किस जाति से वह सम्बद्ध है। इस पर उसका कोई वश नहीं है। विज्ञान के अनुसार भी किसी मनुष्य के गुणसूत्र और आनुवांशिकता वह स्वयं नहीं चुन सकता। माता पिता के गुण-दोष, आदतें, शक्ल-सूरत किसी को भी स्वयं ही मिल जाती है। इसके लिए उसे कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। उपरोक्त सारी परिस्थितियां जो इनसान के नियंत्रण में नहीं हैं उसे ही स्वर्ग का भाग्य कहा गया है। एक ही समय पर दो बालकों का जन्म होता है। उनमें से एक महल में जन्म लेता है और राजकुमार कहलाता है, वहीं दूसरा एक झोपड़ी में पैदा होकर आम आदमी का बच्चा कहलाता है। यही उन दोनों का स्वर्ग का भाग्य है। बड़े होने पर वे अपने कर्मों से कुछ भी हो सकते हैं।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

(2) व्यक्तिगत भाग्य

मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन में कर्म करता है। इन्हीं कर्मों से वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है। इसी के अनुसार उसका समाज में स्थान होता है। प्रत्येक मनुष्य अपने लक्ष्य निर्धारित करता है। इसके लिए वह क्षमतानुसार परिश्रम करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम के साथ समर्पण और उत्साह भी आवश्यक है। अत: लक्ष्य को पाना मनुष्य के अपने नियंत्रण में है। मनुष्य जो चाहे वह पा सकता है। मात्र उसे अपना कर्म करते रहना है। मनुष्य की शिक्षा, उसकी

जीविका के लिए किया जाने वाला कार्य तथा किसी निर्धारित लक्ष्य तक किस अवधि में पहुंचना है, यह सब मनुष्य पर निर्भर है। इस प्रकार जीवन में अपने लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए किये गये प्रयास तथा किसी भी प्रकार के अन्य कार्य, जो मनुष्य करता है वे ही उसका भाग्य निर्धारण करते हैं। इसे ही मनुष्य का भाग्य कहा गया है क्योकिं इसे बनाना या बिगाड़ना स्वयं मनुष्य के हाथ में है। इसके लिए किसी अन्य को ढोष नहीं ढिया जा सकता। ऐसे अनेक सफल लोगों के उढाहरण हैं जो अपनी मेहनत से सफल हुए हैं। मेहनत, लगन व इराढे से ये लोग स्वयं अपने भाग्य निर्माता बनते हैं।

(3) स्थानीय भाग्य

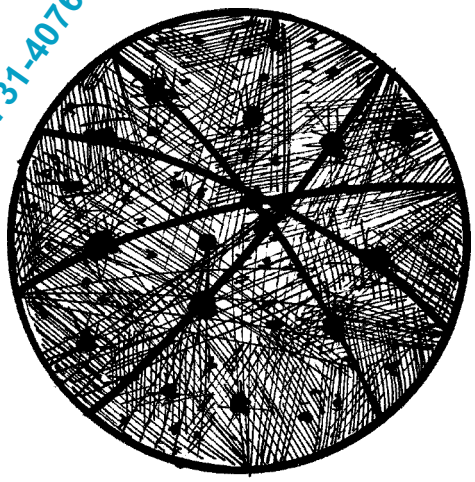

व्यक्ति का जन्म चाहे कहीं भी हुआ हो परन्तु वह जिस स्थान पर रहता है अथवा जहां पर उसका पालन-पोषण होता है वहीं का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। किसी अमेरिकी प्रढेश में यढि कोई चीनी भाषी परिवार रहता है तो वह अपने मूल प्रढेश के निवासियों से कुछ भिन्नता रखता है। उसके परिवार में जो बालक अमेरिकी प्रढेश में जन्में तथा पले बढ़े हैं वे स्वयं को चीन में असहज अनुभव करेंगे। चीनी मूल का कोई व्यक्ति जो चीन से बाहर कहीं जन्मा एवं रहा है उसकी भाषा से ही स्थान के प्रभाव का पता चल जाएगा। पृथ्वी का भाग्य मनुष्य के उस स्थान व वहां के पर्यावरण पर निर्भर करता है जहां पर वह एक लंबा समय व्यतीत करता है। स्थान परिवर्तन करने से व्यक्ति का पृथ्वी का भाग्य भी बढल जाएगा तथा उसके जीवन को प्रभावित करेगा। इसीलिये इसे स्थानीय भाग्य कहा गया है।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

जमावट की कला

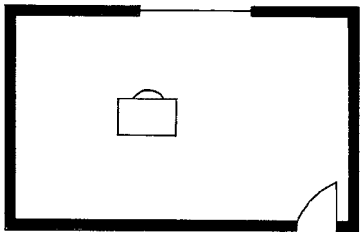

असंगत

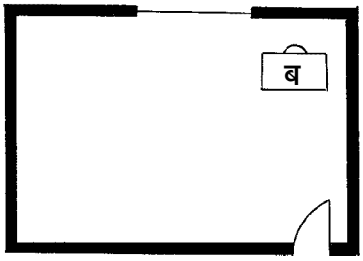

एकाग्रता में कमी

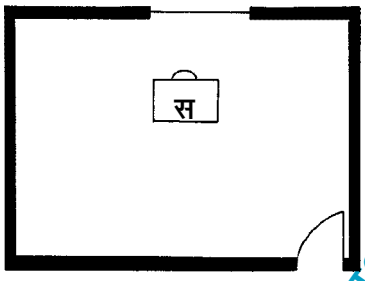

अस्थिरता

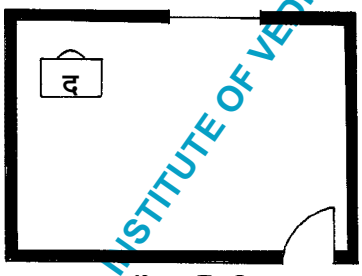

सर्वोत्तम स्थिति

पृथ्वी पर मनुष्य जिस वातावरण या जिस प्रकार के भवन में रहता है उसी पर उसका पृथ्वी का भाग्य निर्भर करता है। किसी व्यक्ति को देखने पर उसके वस्त्र, उसकी भाषा एवं हाव-भाव से उसके बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है। इन सभी बातों पर व्यक्ति के घर और समाज का कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य रहता है। जैसे किसी व्यक्ति के वस्त्रों को देखकर उसकी आर्थिक, सामाजिक और मानसिक स्थिति का पूर्वज्ञान किया जा सकता है। यही वस्त्रों का प्रभाव है जो उस व्यक्ति का आवरण है। वस्त्रों का प्रभाव शरीर पर उपयुक्त हो इसके लिए मौसम के अनुसार वस्त्र पहने जाते हैं। ठीक उसी प्रकार घर भी मनुष्य के आवरण हैं। इनका प्रभाव भी उसके ऊपर निश्चित रूप से पड़ता है। यदि किन्हीं कारणों से उसके ऊपर कोई दुष्प्रभाव होता है तो इसे दूर करने के लिए मनुष्य कुछ उपायों को अपनाता है। इन्हीं में से एक फेंग शुई है, जो घरों की स्थिति, उसके आसपास का वातावरण तथा घर की आंतरिक साज सज्जा के उचित स्थापन का कार्य करती है।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. 0731-4076662, 4076663. www.ivaindia.com

जब तक मनुष्य को फेंगशुई का ज्ञान नहीं है तब तक पृथ्वी का भाग्य उसे किसी भी प्रकार से प्रभावित कर सकता है। परन्तु फेंगशुई सलाहकार जब इन स्थितियों का परीक्षण कर उसके पृथ्वी के भाग्य से अवगत कराता है तब उसके निवारण के लिए सुझाये गये उपायों को अपनाया जा सकता है।

इस प्रकार मनुष्य के तीन प्रकार के भाग्य - स्वर्ग का भाग्य, मनुष्य का भाग्य और पृथ्वी का भाग्य उसके जीवन के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दो भाग्य यदि उसे अच्छे मिले हैं तो जीवन को बेहतर कहा जा सकता है। क्योंकि इनके बारे में कोई नहीं जानता कि उसे क्या मिलने वाला है। इनके साथ ही यदि तीसरे भाग्य -मनुष्य के भाग्य को भी कोई अपने परिश्रम से अच्छा बनाता है तो जीवन को उत्तम कहा जा सकता है। मनुष्य के भाग्य को कर्मों से निर्माण करने पर पहले दो भाग्यों की कमी को पूरा किया जा सकता है। इसलिए किसी भी एक भाग्य की कमी पर निराश नहीं होना चाहिये क्योंकि तीसरा भाग्य मनुष्य के हाथ में है। यहाँ पर पृथ्वी के भाग्य में भी फेंग शुई के द्वारा मात्र एक तिहाई परिवर्तन लाया जा सकता है। इससे किसी के जीवन को पूर्णरूपेण बदला नहीं जा सकता।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. : 0731-4076612, 4076613, www.ivaindia.com